आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 8 • अंक-2201 • उदयपुर, शनिवार 02 जनवरी, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

एक बेमिसाल दान

सूरत में ढाई साल का बच्चा जस ओझा खेलते – खेलते बालकनी से नीचे गिर गया। कुछ दिनों तक हॉस्पिटल में जीवन और मौत से संघर्ष करने के बाद डॉक्टरों ने उसे ब्रेन डेड घोषित कर दिया। जस ओझा के माता – पिता ने अपने ढाई साल के बच्चे का किडनी फेफड़ा हृदय यानी कुल 9 अंगों को दान करने का फैसला किया। चैन्नई में रूस के एक बच्चे को जस का हृदय लगाया जाएगा और चैन्नई में ही भर्ती यूक्रेन के एक बच्चे को जस का फेफड़ा लगाया जाएगा। उसी तरह अहमदाबाद के सिविल हॉस्पिटल में दो बच्चों को जस की किडनियाँ लगाई जाएंगी और जस की आंखे भी चैन्नई के शंकर नेत्रालय में एक बच्चे को लगाई जायेगी। डोनेट लाइफ संस्था के द्वारा प्रोत्साहित करने पर जस के माता – पिता इस बेमिसाल दान के लिये सहर्ष तैयार हो गये थे।

सेवा के संकल्पों, मानव मनोबल व सुखी संसार के सपनोंके सर्जक – श्री कैलाश 'मानव'

नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक, चेयरमेन, नीति आयोग–भारत सरकार के स्वयंसेवी प्रकोष्ठ के सदस्य, आचार्य महामण्डलेश्वर पद्म श्री कैलाश जी 'मानव' का आज 74 वाँ जन्मोत्सव है। 02.01.1947 को भीण्डर (राज.) में साधनारत गृहस्थ श्री मदनलाल जी व श्रीमती सोहनीदेवी की कुक्षी से जन्म लेकर आप साधारण स्थिति से संघर्ष करके मानवता पंथ के उत्तुंग शिखर की ओर आरोहण करते जा रहे हैं। आपका बाल्यकाल भीण्डर में ही बीता। एक साल ननिहाल गंगापुर में भी पढ़े। बाद में भीलवाड़ा आ गये। यहीं इनका संपर्क क्षेत्र बढ़ा तो जीवन के अनेक आयाम खुलते चले गए। माता–पिता के संस्कार तथा स्वयं की सद्भावना के मिश्रण से जो समझ पैदा हुई वह जीवन को आज तक निर्देशित कर रही है। भारतीय डाक व तार विभाग में सेवा करते हुए तथा इस अवधि में श्रेष्ठ पुरुषों के सम्पर्क के कारण श्री कैलाश जी 'मानव' की सेवा–प्रज्ञा का अद्भुत विकास हुआ। संवेदना, करुणा, परोपकार, मानवता तथा सहजता तो उनको मानो विरासत में मिली ही थी पर स्वयंस्फूर्त्य सद्विचारों के कारण उनका रंग गाढ़ा होने लगा था। इनके जीवन को प्रभावित करने में आदरणीय राजमल जी भाई सा., बिसलपुर, डॉ. आर.के. अग्रवाल सा., उदयपुर का भी पूर्ण सहयोग रहा। जीवनसंगिनी श्रीमती कमलादेवी जी ने इनके व्यक्तित्व व कर्तृत्व को फलने–फूलने का वातावरण देने में कोई कोताही नहीं की।

इसी पृष्ठभूमि के आधार पर सन् 1985 में नारायण सेवा संस्थान की स्थापना द्वारा मानव सेवा का संकल्प साकार करने का शुभारंभ हुआ। पिण्डवाड़ा की दुर्घटना तथा अस्पताल में भर्ती सेगी किसना बा की घटना ने कैलाश 'मानव' को धरातलीय सेवा के लिए प्रवृत्त किया।

श्री कैलाश 'मानव' जन्मोत्सव अंक

फिर तो 'एक मुट्ठी आटे' से यह काफिला बढ़ता रहा। इस सेवा अनुष्ठान में श्रद्धेय मफत काका, श्रद्धेय चैनराज जी लोढ़ा, श्रद्धेय पी.जी. जैन आदि के आशीर्वाद ने संकल्प रूपी पंखों में उड़ान की क्षमता भर दी। सौभाग्यवश पुत्र प्रशांत, पुत्रवधू वंदना व पुत्री कल्पना में भी ये संस्कार जागृत होकर यह सम्पूर्ण परिवार नारायण सेवा में जुट गया। आज विश्व में जाना – माना यह संस्थान मानव सेवा के क्षेत्र में अनूठी मिसाल है। अब तक करीब 4,25,000 दिव्यांगों की सेवा करके उन्हें समर्थ बनाने का कार्य सिद्ध हो पाया है तो इसके पीछे सम्पूर्ण समाज का सम्बल ही है। श्री कैलाश 'मानव' मानवता की उत्कृष्टता के लिए हर क्षेत्र में प्रयासरत हैं।

शारीरिक, मानसिक, वैचारिक एवं सर्वांगीण विकास के लिये उनका आचार्य महामण्डलेश्वर वाला स्वरूप उभर कर आया है। भारत सरकार ने उनकी सेवाओं के लिए 'पद्मश्री' अलंकरण प्रदान किया है। आप एक श्रेष्ठ विचारक, कुशल संयोजक, अनन्य मित्र, करुणा के प्रवाहमान व्यक्तित्व हैं किन्तु आपकी सहजता और विनोदप्रियता सर्वस्पर्शी है। आप श्री को 73 वाँ वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर अनंत शुभकामनाएं।

– वन्दीचन्द राव

मानवता पंथ पर बढ़ते चरण....

श्री कैलाश 'मानव' के पुरुषार्थ एवं कल्याणभाव से स्थापित प्रमुख सेवा प्रकल्प

जायसवाल सेवा हॉस्पीटल, सेवाधाम, हि.म. से. 4

चैनराज सावन्तराज लोढ़ा पोलियो हॉस्पीटल, सेवाधाम, हि.म. से. 4

श्रीमती छन्नो देवी हाडा पोलियो हॉस्पीटल, सेवातीर्थ बडी, उदयपुर

सुदामा भोजनालय, सेवातीर्थ, बडी, उदयपुर

श्री गंगा किशन नेत्र एवं आयुर्वेद चिकित्सालय, सेवातीर्थ, बडी, उदयपुर

श्री प्रवीण आर. शाह अतिथि भवन, सेवातीर्थ, बडी, उदयपुर

इंदुमती जसवन्तलाल शाह (दुवावाला) पोलियो हॉस्पीटल,सेवातीर्थ बडी, उदयपुर

श्री सूरजमल लक्ष्मीदेवी सावरथिया सेवा सदन, सेवातीर्थ, बडी, उदयपुर

मीरा की मुरली, सेवातीर्थ, बड़ी, उदयपुर

जायसवाल सेवा हॉस्पीटल, सेवातीर्थ बड़ी, उदयपुर

श्री राजेन्द्र हरिकिशन दास हॉस्पीटल, सेवातीर्थ, बडी, उदयपुर

मातु श्री मुरीबेन बुंगरशी माक निःशक्तजन सेवा केन्द्र सेवातीर्थ बडी, उदयपुर

सम्पादकीय

व्यक्ति जीवन में जो परिकल्पना करता है उसे अपनी आँखों से साकार होते देखता है तो उसे कितना आत्मतोष होता है, यह कोई स्वयं भोक्ता ही जान सकता है। इस उपलब्धि के बाद ही व्यक्ति की परख होती है, क्योंकि यही वह बिन्दु है जहाँ से दो राहें निकलती हैं। पहली राह उपलब्धि के दंभ से परिपूर्ण होकर व्यक्ति को अहं से भर देती है तो दूसरी राह उसे और भी विनम्र बना देती है। अहं का प्रादुर्भाव जिस व्यक्ति में हो गया उसकी तो चर्चा ही व्यर्थ है। जो उपलब्धियों के आकाश में रहकर भी जमीन पर पैर टिकाये हुए होता है, वस्तुतः वही समाज में उदाहरण बनता है। सफलता के शीर्ष पर जाकर भी विनय को साधे रखना असंभव भले ही नहीं है पर दुष्कर तो है ही। यह एक ऐसा अवसर होता है जहाँ पर प्रशंसा के पहाड़ खड़े किये जाते हैं, जहाँ करतब बखानने की कलकल करती नदियां बहाई जाती हैं, जहाँ सिर उठाये पेड़ों से पैरोडी बनाई जाती है। यह स्वाभाविक भी है। किन्तु इस प्रवाह में, इस झोंके में, इस लय में जो न बहे वही तो धनी है मानव मूल्यों का। वही तो उदाहरण होता है शास्त्रीय परम्पराओं का, वही तो फलदार वृक्षों की, गहरे जल प्रवाह की और सबकुछ लुटाती प्रकृति का प्रतिनिधि कहलाता है। श्री कैलाश 'मानव' ऐसे ही एक व्यक्ति हैं। आज भी ठेठ ग्रामीण अंदाज में वार्तालाप, आज भी खनकदार हँसी, आज भी नैसर्गिक व्यवहार आपकी दैनंदिन चर्या में दिखाई देता है। आपके जन्मोत्सव पर यही शुभकामनाएं कि आपके ये विरासती और अर्जित गुण सदैव बने रहें, निखरते रहें, बँटते रहे।

- वरदीचन्द राव

जिन्होंने करुणा और प्रतिभा थाली है कैलाश 'मानव' की

2 जनवरी 1947 को भारत माँ की गोद एवं श्रीमती सोहनी देवी जी की कोख से अवतरित हुए कैलाश जी मानव सेवा के पर्याय बन गये। बचपन में साधु सन्तों को आटा देने से लेकर प्रज्वलित हुई ज्योति से प्रज्ञाचक्षु, विमंदित बाल गोपाल, दिव्यांगजन, वनवासी बन्धु बान्धव, गरीब बेसहारा बीमार, वृद्ध, विधवा के घरों में अनवरत प्रकाश फैल रहा है। दिव्यांगजनों की शल्य चिकित्सा, दिव्यांग विवाह समारोह, दिव्यांगों हेतु सहायक उपकरण एवं कृत्रिम अंग गरीबों के जटिल रोगों के निःशुल्क ऑपरेशन भारत ही नहीं विदेशों के वंचितों को भी लाभान्वित कर सेवा की पताका फहरा रहे हैं। मैं उनके शतायु सुखद एवं सेवामय जीवन की मंगल कामना करता हूँ।

जगदीश आर्य, ट्रस्टी एवं निदेशक, ना.से.संस्थान

नारायण सेवा संस्थान के सेवाभाव को मूर्तरूप देने वाले सेवाऋषि प.पू. आचार्य महामण्डलेश्वर, सकारात्मक जीवन के धनी, संगठन क्षमता में दक्ष, गहराई तक संवेदनाओं से जीने वाले पद्मश्री कैलाश 'मानव' जी के जन्मोत्सव पर मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं एवं प्रणाम–निवेदन। आपने अपनी वाणी और जीवन से हमें सेवा के अर्थों को समझाया ही नहीं जीवन में उतारने की प्रेरणा भी दी है। आपका जीवन अनुकरणीय तथा अभिनंदनीय है।

देवेन्द्र बाबीसा, ट्रस्टी एवं निदेशक, ना.से.संस्थान

मित्रवर श्री कैलाश 'मानव' की सेवाभावना से मैं करीब 30–32 सालों से परिचित हूँ। प्रारंभिक काल में इनकी सेवाकार्यों के प्रति जीवटता का मैं प्रत्यक्षदर्शी रहा हूँ। जब संसाधनों का अभाव सा था तब भी और आज जब संसाधन ठीक–ठीक उपलब्ध हैं इन दोनों स्थितियों में इनकी सेवाभावों की गुणवत्ता यथावत् है। मेरी शुभकामनाएं कि ये शतायु हों। **– डॉ.दिलखुश लाल सेठ, उदयपुर**

दुनिया में कई शब्द है किसी की प्रशंसा के लिये, लेकिन आपके लिए मेरे हिसाब से ऐसा कोई शब्द नहीं जो आपके कार्यों को एक शब्द में बया कर दें, लोग कहते है इंसान को भगवान बनाता है परंतु जीवन के बाद अगर कोई जीवन देता है वो आप है, कई लोगों को पीढ़ियों को आपने जीवन जीना सिखाया है। लोगों की सहायता के लिये दान देना कोई बड़ी बात नहीं लेकिन लोगों के साथ रहकर उनकी तकलीफो को समझना कोई आपसे सीखे। मुझे नहीं पता भगवान कैसा है, परंतु मैं कहुंगा मेरा भगवान मेरे बाबूजी जैसा

अक्षय कुमार रावल, डूंगरपुर

मानव का जो जन्म मिला
सबने वह स्वीकारा है।
इस पृथ्वी पर जो जन्म अधूरा मिला,
नारायण ने स्वीकारा है।
स्वयं के कष्टों को देख
नम थी ये आँखें,
नारायण ने सब के कष्टों को
प्रस्थान का द्वार दिखाया है।

– कंचन वर्मा, मुम्बई

मैं नारायण सेवा संस्थान में 8 महीने से आ रहा हूँ। यह संस्थान बहुत अच्छा है। यहाँ खाना–पीना, रहना, चाय नाश्ता (नर्सिंग स्टाप) सारा निःशुल्क हो रहा है। अन्य रोगी से भी मैंने चर्चा एवं बातचीत की, उनका भी यही अनुभव एवं मत है।
मैं कैलाश जी बाऊजी को कोटि– कोटि प्रणाम करता हूँ।

अनुराग शर्मा, नगवा (म.प्र.)

हम संस्था में पहली बार आये हैं। यहाँ आकर हमें यहाँ का वातावरण और सुविधाएँ जो मिली हैं वो बहुत अच्छी है। खाना, रहना जो भी सुविधाएँ मिल रही हैं। वो निःशुल्क मिल रही है। हमने गुरु जी का प्रोग्राम टी.वी. पर देखा जो हमें बहुत ही अच्छा लगता है। कई बार लाईव प्रोग्राम देखने का भी अवसर प्राप्त हुआ है।

रेखा भिव्या – लखनऊ

संस्थान में पेशेन्ट आयुष जो मेरा लड़का है मैंने उसका ओपरेशन सूरत में करवाया मगर कोई लाभ नहीं हुआ। मैं टी. वी. के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान आया, यहाँ मुझे बहुत अच्छा लगा। यहाँ पर सारा काम निःशुल्क होता है। ऐसी संस्था मैंने पहली बार देखी है। मैं कैलाश जी मानव साहब का बहुत आभार प्रकट करना चाहता हूँ। मेरे लड़के का ऑपरेशन हो गया है।

महेश, दमन (गुजरात)

We have come for the first time for my sister's treatment. Hospital, staff, Doctors are very cooperative, polite and kind hearted. Hospital facilities are very good for their patient as well as attendant. Thanks to all the members, staff and Doctors of Narayan Seva Sansthan for their help and all the concern.

Lavisha Dhunna, Ganganagar (Raj.)

संस्थान में आते हुए करीब 6 माह हो गये है मैंने अपनी बच्ची का इलाज बाहर बहुत सी जगह करवाया था लेकिन कहीं भी आराम नहीं मिला। नारायण सेवा संस्थान में आकर मेरी बच्ची सही हो गयी है। मैं संस्थान का पूर्ण आभारी हूँ साथ ही गुरुजी का बहुत आभारी हूँ। मैं गुरुजी नियमित लाईव देखता हूँ एवं दिव्यांग लोगों को संस्थान के बारे में जानकारी देता हूँ।

मो अहमद अंसारी, पटना, बिहार

प्रवचनों से उद्धृत

मानव-मानस-मंथन के वैश्विक सूत्र

- सरल जीवन हो, सेवामय जीवन हो।
- जो अपनी मदद करता है, भगवान उसकी मदद करता है।
- धीरज रखो, धैर्य रखो, मित्रता अच्छी रखो। नारी का सम्मान रखो तो बाधा दूर हो जाती है।
- नारायण सेवा का अर्थ है साहस।
- अध्यात्म भगोड़ों का नहीं, शूरवीरों का साथ देता है।
- जीवन रूपी औषधि एक्सपायर हो जाये गी, हमें अपने जीवन को दीन-दुखियों की सेवा में लगा देना चाहिए।
- भारतीय संस्कृति में समस्त पृथ्वी को अपने परिवार के रूप में माना गया है।
- हम विनम्र हैं तो हमारे साथ दूसरों का व्यवहार भी नम्र होगा।
- लाठी और पत्थर की चोट से भी ज्यादा घातक होती है 'अपशब्द' अथवा अहंकार युक्त वाणी की चोट।
- सज्जनता की परीक्षा पहले वाणी फिर व्यवहार से होती है।
- मीठी वाणी और सद्व्यवहार व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला है।
- हमें कर्महीन नहीं, कर्मवान बनना है।
- मानव में करुणा का भाव स्थायी है।
- धर्म की धारणा के अनेक बीज हैं उनमें दया भी प्रमुख है।
- दयाभाव उपजते ही करुणा की धारा उत्पन्न होकर बहने लगती है।
- करुणाधारा से ईश्वरीय कार्य सधने लगते हैं।
- दौलत का सर्वोत्तम उपयोग–असहाय बीमारों दुःखियों एवं निराश्रितों के सेवा में लगाना।
- जब दैवीयगुण अन्तर्मन में अंगड़ाई लेते हैं तो अन्तःकरण स्वतः शुद्ध हो जाता है।
- जिस कार्य से आपको आत्मसंतोष मिले वही कार्य श्रेष्ठ है।
- निष्काम कर्म व निष्काम भक्ति ही लोक–परलोक में कल्याणकारी है।
- विश्वास फलदायक होता है। विश्वास ही फलदायक होता है।
- हरकत में बरकत है।
- किसी को कष्ट देना, बहुत बड़ी हिंसा है।
- आप यदि जुआ खेलोगे तो डूब जाओगे।
- बड़ों का अपमान करना ही उनके वध करने जैसा है।
- खुद की प्रशंसा करना आत्महत्या करने जैसा है।
- एक दूसरे की निंदा करना पाप है।
- आदमी को आदमी का प्यार दो।
- प्रेम, अहिंसा, सेवा, करुणा ही हृदय के आधार है।
- परोपकार की धुन को हमें सदा पकड़े रहना चाहिए।
- प्रेम बाजार में बिकने वाली वस्तु नहीं है।
- कठिनाइयों में भी आप धर्म का पालन करते रहें।
- पेट नरम, पैर गरम, सिर ठण्डा रखना चाहिए।
- परोपकार एक ऐसी पूंजी है जो सदैव अक्षय है।
- संसार में उसी मनुष्य का जीवन धन्य है जो सेवा से युक्त अपना जीवन जीता है..।

नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक पद्मश्री कैलाश 'मानव' का मैं तहेदिल से साधुवाद अर्पित करता हूँ जिन्होंने समाज में हजारों असहाय शारीरिक पीड़ितों को सहारा दिया, इलाज करवाया और एक नई चेतना का संचार कर उन्हें एक मकाम दिया जिससे आज वे एक सम्मानजनक जीवन जी रहे हैं।

मानव कल्याण के लिए आपश्री में निहित जज्बे एवं सेवा के इस आयाम को मेरा कोटि–कोटि नमन। आपके इस नेक कार्य से उदयपुर को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मेवाड़ एवं प्रदेश को देश एवं दुनिया में ख्याति मिली है जिसका उदयपुरवासियों को पूरा–पूरा अहसास है।

प्रो. जी.एस. आमेटा, पूर्व निदेशक, कृषि अनुसंधान
महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय एवं अध्यक्ष–विवेक पार्क, से. 3 उदयपुर

कैलाश जी मानव को जैसा मैंने जाना

कैलाश जी 'मानव' अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की आहट एवं आवाज को पहचान जाते हैं। यह उनकी जन्मजात विशिष्ट प्रतिभा को दर्शाता है। प्रत्येक व्यक्ति के बारे में पूरी जानकारी रखना, देश –विदेश में अपनी योग्यता की छाप छोड़ना एवं सभी की यथायोग्य मदद करना उनकी आदत है। जो भी व्यक्ति उनके सम्पर्क में आता है उसकी छुपी प्रतिभा को पहचानना एवं समाज के सामने लाना उनका विशेष गुण है। पदमश्री कैलाश जी मानव एक असाधारण व्यक्तित्व के धनी एकदम साधारण जीवन शैली वाले व्यक्ति हैं जिनको शत–शत नमन एवं अभिनन्दन। हम उनके शतायु होने की कामना करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी योग्यताओं का लाभ समाज, देश व विश्व को अनवरत मिलता रहे।

विपिन पारिख
पूर्व उप महाप्रबन्धक, बैंक ऑफ बड़ौदा

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023